* हल का सबलीकरण का सिद्धान्त : (Hull's Reinforcement Theory)

इतिहास :-

सबलीकरण के सिद्धान्त को क्लार्क एल० हल० द्वारा 1915 ई० में प्रतिपादित किया गया इस सिद्धान्त के ऊपर अपने विचारों को हल ने अपनी पुस्तक (Principle of behaviour System) में लिखा। हल जो कि पेशे से इन्जीनियरिंग था। मनोवैज्ञानिक में रुचि रखने के कारण बाद में एल० विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रोफेसर बना तथा सबलीकरण के इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

सम्प्रत्यय (Concept) :-

हल ने इस सिद्धान्त का आधार व्यक्ति के आवश्यकता पूर्ति को माना है। उन्होंने माना कि कोई व्यक्ति या पशु किसी आवश्यकता को प्रयासरत होकर पूर्ण करता है तो वह सीख लेता है। जैसे —

थार्नडाइक के प्रयोगों में बिल्ली पिंजड़ा खोल कर अपनी भोजन की आवश्यकता पूर्ति करना सीख गई।

अतः हल के अनुसार यह कहा जा सकता है कि भोजन की आवश्यकता पूर्ति की प्रक्रिया द्वारा बिल्ली पिंजड़ा खोलना सीख जाती है। इस आधार पर हल ने स्वयं कहा कि सीखना आवश्यकता पूर्ति की प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न होते है।

हल ने सबलीकरण के दो प्रकार माने है।

(i) प्रधान सबलीकरण
(ii) गौण सबलीकरण

(i) प्रधान सबलीकरण :-

इसके अन्तर्गत वे समस्त उत्तेजनाएँ आती है जो किसी प्रेरणा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है जैसे – भूख के लिए भोजन प्राथमिक सबलीकरण है।

(ii) गौण सबलीकरण :-

इसके अन्तर्गत वे क्रियाएँ आती है जिसके द्वारा प्रधान सबलीकरण प्राप्त होता है और वह क्रिया को दोहराता है। जैसे भोजन के लिए लार गिरना गौण सबलीकरण है।

इस प्रकार हल का सबलीकरण सिद्धान्त थार्नडाइक की तरह सीखने के अभ्यास के महत्व को स्वीकारता है इसके अनुसार जब किसी प्राणी द्वारा किसी उद्दीपन के प्रतिक्रिया स्वरूप बार-बार एकसी अनुक्रिया दुहराई जाती है तो उनमें घनिष्ट संबंध स्थापित हो जाता है। इस प्रकार स्किनर ने इस सिद्धान्त को सीखने का सर्वश्रेष्ठ

सिद्धान्त मानते हैं इनका कथन है —, " अबतक सीखने के जितने भी सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये हैं यह सिद्धान्त बालको के शिक्षण में प्रेरणा पर अत्यधिक बल देता है।

* हल के सिद्धान्त के शैक्षिक आशय / निहितार्थ / महत्व Educational Implication of Hull's Theory)

इस सिद्धान्त में शैक्षिक निहितार्थ के निम्नवत् व्यक्त किया जा सकता है।

⇒ हल का सिद्धान्त आवश्यकता पूर्ति पर आधारित है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अध्ययन हेतु प्रेरित होता है। अतः पाठ्यक्रम में इस प्रकार के विषय या विषयवस्तु होना चाहिए। जिसमें बालको की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

⇒ यह सिद्धान्त लक्ष्य प्राप्ति की ओर बालक को प्रेरित करता है इसमें प्राणी का लक्ष्य उसके काम करने की गति को बढ़ा देता है। और लक्ष्य स्पष्ट होने के कारण रुचि से सीखता है।

⇒ विभिन्न व्यक्तियों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं इसलिए इनकी पूर्ति की प्रक्रिया भिन्न होती है इसलिए इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण या अधिगम पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

⇒ इस सिद्धान्त द्वारा बालको में अच्छी आदतें निर्मित की जा सकती है।

⇒ इस सिद्धान्त के द्वारा आत्म विश्वास का गुण विकसित होता है।

⇒ यह सिद्धान्त प्रेरणा पर काफी बल देता है अतः 'अध्यापक को चाहिए कि वह नया ज्ञान सिखाने से पहले विद्यार्थियों को प्रेरणा दे।

⇒ यह सिद्धान्त पुरस्कार या सबलीकरण के महत्व पर जोड़ डालता है। इस कारण शिक्षा में दण्ड के अपेक्षाकृत पुरस्कार का महत्व बढ़ा।

⇒ यह सिद्धान्त अभ्यास पर ही बल देता है अतः अध्यापक को चाहिए कि वह ज्ञान की पुनरावृति कराये और उसका अभ्यास भी करायें इसके लिए कक्षा में प्रश्न पूछना, गृह-कार्य देना, वाद-विवाद करना इत्यादि।

⇒ यह सिद्धान्त अनुक्रिया के प्रबलन पर बल देता है। अतः विद्यार्थी के सफल और वांछित प्रयास की उसकी प्रशंसा करके, उसे अंक देकर या अन्य कोई पुरस्कार देकर प्रबलित करना चाहिए। इससे वह क्रिया के पुनरावृति करेगा अतः अध्यापक और माता-पिता को चाहिए कि बालक के आवश्यकता जान लेने के बाद ठीक से उसे शिक्षा दे।

⇒ हल का सिद्धान्त क्रमबद्ध और वस्तुनिष्ठ सिद्धान्त है इस प्रकार स्किनर ने इस सिद्धान्त को सर्वश्रेष्ठ माना है।

* हल का सिद्धान्त के गुण या विशेषताएँ :—

हल की सीखने की सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

⇒ लेस्टर एण्डरसन के मत में हल का सिद्धान्त भी उसी वर्ग का है जिस वर्ग का थार्नडाइक का सिद्धान्त है।

⇒ प्रबलन का सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि विद्यालय के विभिन्न क्रियाओं में बालको की आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया जाय।

⇒ कक्षा में पढ़ाये जाने वाले तथ्यों के उद्देश्य को स्पष्ट करना इस दृष्टि से परम आवश्यक है।

⇒ यह सिद्धान्त शिक्षा प्रेरणा के महत्व पर विशेष बल देता है। प्रेरणाओं पर मुख्यतः इस कारण अधिक बल दिया जाता है कि वे प्राणी की अनिवार्य आवश्यकताओं से संबंधित है।

⇒ इस सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इसमें बालकों की क्रियाओं और आवश्यकताओं में संबंध की स्थापना पर विशेष बल दिया जाता है साथ ही यह सिद्धान्त बताता है कि पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए।

* हल की सिद्धान्त की सीमाएँ / दोष / आलोचनाएँ।

हल का सिद्धान्त इतना महत्वपूर्ण होते हुए भी इसके कुछ दोष निम्न है।

⇒ यह सिद्धान्त बहुत ही कम प्रयोगों के आधार पर बना है मानवो पर प्रयोगों द्वारा इसका बहुत कम सत्यापन हुआ।

⇒ इस सिद्धान्त का प्रयोग, प्रयोगशाला से बाहर कठिनता पूर्ण माना गया है।

⇒ हल का सिद्धान्त गुत्र अधिगम की व्याख्या नहीं करता है।

⇒ शिक्षा मनोवैज्ञानिक ने कहा कि हल ने आदत बल की निर्माण के लिए पुनर्बलन प्रयास को अनिवार्य माना। जबकि टॉलमैन ने कहा कि वास्तव में सीखने की प्रक्रिया पुनर्बलन की अनुपस्थिति में भी होता है।

⇒ इस सिद्धान्त के विषय में आलोचकों का मत है कि हल के प्रति परिणामकता दृष्टिकोण अपूर्ण थे। एकही क्रिया / नियम सभी परिस्थितियों पर लाग करने का हल का प्रयास सही नही माना। क्योंकि एक

व्यक्ति पर समीकरण का मान अलग - अलग हो सकता है।

निष्कर्ष :—